

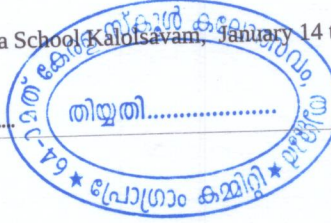


पापा का पुकार

सुबह की हल्की धूप रौजापुर के सड़की पर फैली हुई है। रोज के जैसा माँ का पुकार शुरू हो गई है। "अरे पप्पू उठो" माँ का आवाज़ पड़ोस के घर से भी पहुँचेगा। माँ की पुकार से लेकिन मैं नहीं पापा हर दिन चौंकर जोड़ से उठती थी। आज भी जैसा हुआ। लेकिन आज माँ मुझे जैसे चौड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ। उसने एक हल्की लकड़ी लेकर मेरे कमरे के दरवाजे पर जोर से टक्कर कर कहा "क्या तुम खुद से जाइगा या मुझे तुम्हें इस कमरे के बाहर फेंगना पड़ेगा?"। माँ का डाँट सुनकर मैंने अचानक आँखों खोलकर खिड़की के बाहर देखा। मैंने सोचा कि बाहर कुछ नगड़ा हो रही है। आखिर माँ का क्रोध भरी चेहरे को देखकर मुझे पता लगा कि अब स्कूल जाने के लिए देर हो गई है। आज मेरे लिए एक साधारण दिन नहीं है। आज मेरा सपना पूरा करने का अंतिम अवसर



Item Code: 952



Participant Code: 031

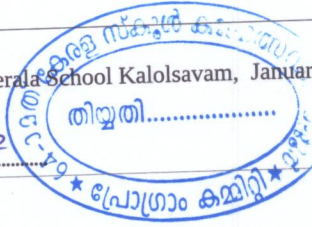
होगा। बचपन से ही पापा मुझे क्रिकेट खेलना सिखाती थी। इसलिए बचपने सेमेश सपना था एक अच्छा क्रिकट लेयर बनना। यह सिर्फ मेश सपना ही नहीं थी क्रिकट मेरे पापा का अधूरा हो भये गए सपना भी थे। आज वो वक्त आ गई है। मेरे मन में आज सिर्फ वो मैदान का झोंका था। पापा बाहर गाड़ी लेकर मेरा इंतजार कर रही हैं। मैंने खेल नए होने के फिक से खाना नहीं खाया और जल्दी से कपड़ा पहनकर गाड़ी में बैठा। गाड़ी चलना शुरू किया लेकिन अब भी मैं पीछे से मुझे डरती है। मैंने अनसुनी जैसा अभिनय किया। जब मैं स्कूल पहुँच गया तब अभी मेरी तलाश में थी। मैंने जल्दी मैदान पहुँच गया। प्रतियोगिता शुरू होने के लिए पाँच और मिनट बाकी है। मैंने माच के पहले कुछ व्यायाम करके कुछ सोचकर मैदान पर बैठा। अब माच शुरू होनेवाली है। काच ने मुझे कमरे से जाकर बाट और बॉल लेने के



लिङ कहा और मैं बैचैन से दौड़कर
कमरे से चीजों लेकर वापस मैदान लौया।
अचानक से मैंने मैदान के बीच रुककर मेरे
घर ओर देख देखकर हैरान हो गया
क्योंकि मेरे साथियों और काँच सब मुझे
कुछ भी भाव से देख रही है। फिर काँच
ने मेरे निकट आकर कहा, "बेटा, तुम घर
चलो जल्दी, तुम्हारे माँ तुम्हें इंतज़ार कर रही
है।" मैंने पूछा उससे "क्या मुझे यह सब
चौड़कर चलना है? यह मेरा सपना ही नहीं
मेरा आत्मा है।" काँच ने मेरे कंधे पर
हाथ रखकर कहा "तुम जल्दी चलो, यह
तुम्हारी जीवन से भी बड़ी है।"

मुझे उसके बात सुनकर पता चला
कि कुछ बुरा तो होनीवाली है। मैंने बिना
अन मैदान से बाहर चला। मैंने शिक्षा के
अदारे घर लौट गया।

जब मैंने मेरा घर के आंगन पहुँचा, अचानक
से एक पल के लिए मेरे दिल का तड़प थम
गई और मुझे कुछ न दिख रही थी।



एक पल के बाद मैं साँस लेकर आगे चला
और मैंने बिस्तर पर सर गई मेरे पापा को
देखा। जब वह मुझे स्कूल छोड़कर वापस
लौट रही थी उसको एक दुर्घटना हो गई।
आस्पताल ले जाने से पहले ही सर चुका था।
माँ के होश चली गई और उसे भी
कमरे में लेकर गई है। जब मैंने कमरे में
गया माँ अब उठकर चार और चलती रही
कुछ बोलकर।
मुझे कुछ समझ नहीं आ रही थी कि
मुझे क्या करना है। अपनी पापा का चेहरा
और माँ का हालत सब देखकर मेरे मन
दर्द और दुख से भरकर मुझे कुछ सुन
ना देख न ब सकता थी। मैंने अचानक
घर से बाहर चला और सड़क किनारे
तेज से चलना शुरू किया।
मेरी मन में कुछ अजीब सा लग रहा था।
पता नहीं मेरा आँखों के सामने सिर्फ
पापा के साथ क्रिकेट खेलने का दृश्य तैर
रही थी।



मेरे अंदर से अचानक पापा का पुकार
चुनने लगा। मैंने सोचा यह मेश ही नहीं
पापा का भी अपना है। मुझे उनके लिए
आज प्रतियोगिता जीतना होगा।
मैंने बिना कुछ सोचकर मैदान में
पहुँच गया। अब प्रतियोगिता का आखिरी खेल
होनीवाली है। मैंने काँच के पास जाकर
उनका हाथ पकड़कर कहा "हारना मेरे लिए
मंजूर नहीं है, मुझे पापा के लिए जीतना
है"। उनको मुझ पर पूरा विश्वास था। उसने
मुझे खेलने के लिए अवसर दिया। मैंने
अपनी बेटीन और और दुख से भरी मन
से अपने पापा के साथ खेलने के चादों
से खेलना शुरू किया। खेलते वक्त
मे मुझे पापा का पुकार और अस्तित्व महसूस
किया। मुझे कहीं से जीतने का ताकत
मिला। मैंने वह प्रतियोगिता से जीत गई।
सभी खेल के बाद अपनी सफलता को
मना करने के लिए जाचती हूँ। लेकिन
मेश मन इस संतोष और आह्लाद भरी



Item Code:



Participant Code: 081

हाल में भी सूचा-रूचा रहा। मेरा मन
जब पापा के विदा से टूटा है तब भी ठक
सकून है कि मैंने उनका अधूरा सपना
को पूरा किया है।

माँ और मुझे चौंकर पापा तो इस दुनिया
से चली गई लेकिन उनकी यादें मेरी
मन में दृश रहेंगी हर पल। अगर मैं
यह प्रतियोगिता दुख से नष्ट किया तो मेरी
पापा की सपना अधूरा ही रहेगा